दिसंबर 2025

धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का वैज्ञानिक विश्लेषण

अखण्ड ज्योति

वर्ष 89

अंक – 12 । प्रति – ₹ 25 । ₹ 300 वार्षिक

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जन्म शताब्दी 1926 2026

अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष 1926 2026 शान्तिकुञ्ज-हरिद्वार

A.J. 172

8 ▸ आत्मजागरण का राजमार्ग

19 ▸ कैसे करें स्वयं का सृजन

29 ▸ बच्चों को मन से परिचित कराएँ

61 ▸ सद्गुण और समृद्धि साथ-साथ

CamScanner

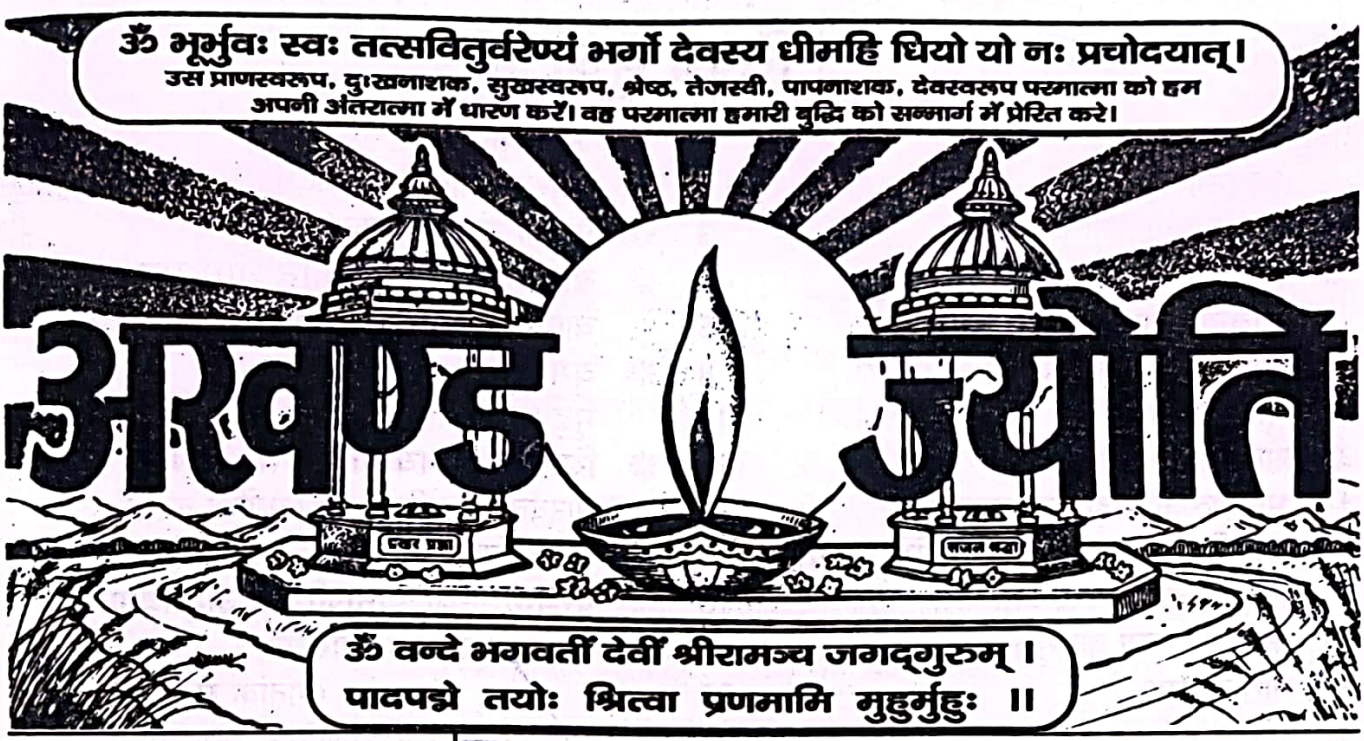

संस्थापक-संरक्षक
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
एवं
शक्तिस्वरूपा
माता भगवती देवी शर्मा
संपादक
डॉ० प्रणव पण्ड्या

कार्यालय
अखण्ड ज्योति संस्थान
बिरला मंदिर के सामने मथुरा-वृंदावन रोड जयसिंहपुरा, मथुरा (281003)
दूरभाष नं0 (0565) 2403940, 2972449
2412272, 2412273
मोबाइल नं0 9927086291, 7534812036
7534812037, 7534812038, 7534812039
व्हाट्सएप नं. 9927086290
समय—प्रातः 10 से सायं 6 तक
कृपया इन मोबाइल नंबरों पर एस. एम. एस. न करें।
नया ई-मेल :
akhandjyoti@akhandjyotisansthan.org

वर्ष	:	89
अंक	:	12
दिसंबर	:	2025
मार्गशीर्ष-पौष	:	2082
प्रकाशन तिथि	:	01.11.2025

वार्षिक चंदा

भारत में सामान्य डाक से	:	300/-
विदेश में	:	2800/-
आजीवन (बीसवर्षीय)		
भारत में सामान्य डाक से	:	6000/-

वंदनीया माताजी

(क्रमशः)

वंदनीया माताजी—हम सबकी माँ हैं। 'माँ' यह एक शब्द स्वयं में महाचमत्कारी, अतिशक्तिशाली महामंत्र है। इसके उच्चारण मात्र से प्रसन्नता, पावनता, सुरक्षा-संरक्षण सब कुछ बिना माँगे मिल जाता है। इस शब्द में समायी उनके दुग्ध-अमृत की धार स्मरण मात्र से वात्सल्य प्रेम की रसानुभूति में भिगो देती है। माँ की गोद अपनी संतानों का भार उठाने में धरती से अधिक सक्षम है। सुरक्षा व संरक्षण देने वाली उनके आँचल की छाया आकाश से कहीं अधिक व्यापक है। हम सबकी माँ, हम सबके लिए अंतर्जगत का अनंत प्रकाश समेटकर धरती पर आईं। हम सबके भौतिक-दैविक एवं आध्यात्मिक भय-ताप हरण करने के लिए शांतिकुंज के वनक्षेत्र में रहीं। जब वे यहाँ पर मथुरा में अपना समूचा परिवार, सगे संबंधियों को छोड़कर आई थीं, तब यह शांतिकुंज वनभूमि ही था। इसके आस-पास दिन के उजाले में भी वन्यपशु ही घूमते थे, परंतु वे तो जैसे उनकी भी माँ थीं। न उनको किसी का भय था और न उनसे किसी को भय था। उन्होंने यहाँ पर रहकर गायत्री महामंत्र के 24 महापुरश्चरण संपन्न किए। उनके द्वारा संपन्न की गई इस महापुरश्चरण साधना की नियम-व्यवस्था, विधि-विधान सभी कुछ भिन्न था। यहाँ उन दिनों रहने वाली चौबीस देवकन्याएँ इस साधना में उनकी सहयोगी-सहायक बनीं। आदिशक्ति ने अपनी समस्त चौबीस शक्ति-पुत्रियों के साथ यह महासाधना पूर्ण की। इस समर्थ गायत्री-साधना की आध्यात्मिक ऊर्जा ने हिमालय व गंगा की आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ मिलकर शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित व प्रकाशित किया। ❑

▶ 'नारी सशक्तीकरण' वर्ष ◀